International Journal of Scientific Research in Science and Technology
© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

'रामचन्द्रिका' क काव्य सौन्दर्य

नीरज कुमार
हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

'रामचन्द्रिका' केशव द्वारा लिखित परम्परा का महाकाव्य है। इसमें रामकथा का वर्णन है। इसमें अनेक ऐसे प्रसंग आए हैं जिनमें कवि ने अपने सहृदयता को प्रमाणिक करने की कोशिश की है। केशव ने इसमें परम्परागत कथा को आधार बनाया है और रीतियुगीन दरबारी वैभव की युगीन परिस्थितियों में उसे अपने विचारों और भावों के अनुसार एक नवीन एवं मौलिक रूप प्रदान किया है। 'रामचन्द्रिका' 39 प्रकाशों में विभक्त है। आरंभ के 26 प्रकाशों में रामतिथक की कथा आती है। 27 से 32 वें प्रकाश तक राजा–राम उनके शासन तथा रामराज्य का चित्रण है। 33वें प्रकाश से अन्तिम प्रकाश तक सीता निर्वासन की कथा चर्चित है। इसमें केशव ने अपने भाव और विचार के अनुसार प्रसंगों का क्रमबद्ध वर्णन किया है।

'रामचन्द्रिका' की महत्त्वता पर विचार करने पर हम पाते हैं कि संस्कृत साहित्य में भी राम संबन्धी जितने भी महाकाव्य हैं, उसमें **'वाल्मीकी रामायण'** के अतिरिक्त किसी में भी राम के जीवन का पूर्ण विस्तारर नहीं है। प्रत्येक कवि ने अपने रूचि के अनुसार घटनाओं का चयन कर रामचन्द्रिका का गान किया है। केशव का उद्देश्य भी राम के जीवन का पूर्ण चित्र अंकित करना ही नहीं है बल्कि चन्द्रिका के सदृश्य उनको उनके घवल यश का प्रकाश विकीर्ण करना ही है। **केशव ने 'रामचन्द्रिका' का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कहा भी है–**'रामचन्द्र की चन्द्रिका बरनत हैं। बहु दंद।'

'रामचन्द्रिका' केशव द्वारा संवाद शैली में लिखित महाकाव्य है। इस दृष्टि से 'रामचन्द्रिका' का काव्य–सौन्दर्य को स्पष्ट करने के लिए उसकी संवाद–योजना व संवाद की विशेषताओं का अवलोकन करना महत्त्वपूर्ण है। इस काव्य में जो महत्त्वपूर्ण संवाद है वे हैं– दशरथ–विश्वमित्र संवाद, सुमति–विमति संवाद, रावण–बाणासुर संवाद, जनक–विश्वमित्र संवाद, परशुराम–वामदेव संवाद, परशुराम– राम संवाद, कौशल्या–भरत संवाद, कैकेयी– भरत संवाद, शूर्पणखा– भरत सवांद, राम– जानकी संवाद, राम– लक्ष्मण संवाद, रावण–अंगद संवाद, सीता– रावण संवाद, सीता– हनुमान संवाद, रावण– हनुमान संवाद, लव–कुश– भरत संवाद, लव–कुश– विभीषण आदि संवाद।

इन संवादों में कई संवाद छोटे और कई बड़े लम्बे हैं। केशव दरबारी कवि थे। अतः दरबारी जीवन में वाक् पटुता का बड़ा महत्त्व रहता था। इसीलिए वे उन्हीं प्रसंगों कीी संवाद–योजना में कौशल दिखाते हैं जिन प्रसंगों में उन्हें वाक् चातुरी प्रकट करने का मौका मिला है।

'रामचन्द्रिका' के संवाद–योजना की प्रथम विशेषता यह है कि इसके संवाद कथा को गति देने में सक्षम हैं। इसमें घटनाओं में सम्बन्ध सूचना तथा संयोजन स्थापित किया गया है। विवेचित घटना प्रसंग से अतीत एवं भविष्य की घटनाओं का संबन्ध सूत्र स्थापित कर कथा प्रसंग की मार्मिकता को बढ़ाते हुए पात्रों के चारित्रिक पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। इस दृष्टि से **रावण–हनुमान संवाद** दृष्टव्य है, जिसमें **व्यंग्य एवं वैदम्य** ओतप्रोत है–

रे कवि कौन तू? अक्षको घातक दूत बली रघुनन्दन भू को।
को रघुनन्दन रे? त्रिशिरा खदूषण दूषन भूषन को।
सागर कैसे तरघो? जसगोवद, काम कहा? सिय चोरहि देखो।
कैसे बंधायो? भू सुन्दरी तेरी छुई दृग सोबत सपातक लोखो।।

इसकी दूसरी विशेषता है, संवादों के द्वारा पात्रों के चरित्रिक पहलुओं को प्रकट किया जाना। विश्वामित्र, राजा जनक का परिचय देते हुए कहते हैं–

केशव में मिथिलाधिन हैं जग में जिनकी रति वेली बई है।
दान कृपान विधानन हैं सों सिगरी वसुधा जिन हाथि लई है।
अंग छ सातक आठक सों भव तीबिछु लोक में सिहि भईने
वेदयती अरब राजासिरी परिपूरणता सुभ योग मई है।

राजा जनक विश्वामित्र के चरित्र का उजागर करते कहते हैं–

यिज अपनो तन स्वर्न मोलि तपोमय अग्नि में।
कीन्हों उलम वर्न तेई विश्वामित्र ये।।

तीसरी विशेषता है, **संवाद पात्रों के भावानुकूल है। प्रसंगानुसार भाव पात्रों के अन्तरंग को स्पष्ट किया गया है–** एक प्रसंग में धनुष भंग के कारण परशुराम क्रुद्ध हैं लक्ष्मण के उत्तर से वे अधिक क्रोधित होकर कहते हैं–

हाथ धरे हथियार सबै तुम सोभत हो।
मारन हारहि देखि कहा मन धोभत हो।

इस पर लक्ष्मण भी व्यंग्य करते हैं। इस व्यंग्य से परशुराम तिलमिलाकर कहते हैं–

लक्ष्मण के पुरिखान कियो, पुसारथ सोन कौकहौ परई।
वेस बनाइ कियौ बनितानि को, देखन 'केशव' सौ हरई।।
कूट कुठार निहासि तमै फल, ताकौ यहै भु तियौ भरई।
अभि तैं 'केशव' ताको महाधिक, छत्रिन पे जो दया करई।।

'रामचन्द्रिका' की चौथी व महत्त्वपूर्ण विशेषता है कि इसमें कार्य गति में तेजी लाने और उसे तीव्र गति से फलकी और उन्मुख करने की अपूर्व शक्ति है। इसमें अधिकांश संवाद छोटे हैं लेकिन कई स्थलों पर एक छंद में कई संवाद हैं जो कथावस्तु में तीव्रता, नाटकीयता प्रवाह और प्रभाव उत्पन्न कर देते हैं।

'कोन के सुन?' 'बलि के' 'वह कौन बालि' न भामि?
कांरव चापि तुम्हें जो सागर सात–हात बखानिए।
है कहाँ वह? तीर अंगद देवलोक बताइयो।
'क्यों गयो?' रघुनाथ बान बिमान बैठि लिधाहयो।।

उसी प्रकार राम–परशुराम संवाद भी छोटे और कार्य गति प्रेरक हैं–

परशुराम– तोहि सरासन संकट को सुभ सीन स्वयंवर मोक्ष बरी। तातें बढयो अभिमान महा मन मोरियो नैनक संक करी।।

राम–सौ अपराध परो हम सों अब क्यों सुधेरे तुमहूँ, यौं कहौ।

छंदों के सम्बद्ध में महाकवि केशवदास छंदशास्त्र के प्रकांड पंडित ही नहीं, उसके सफल प्रयोक्ता भी हैं। इन्होंने मात्रिक तथा वर्णिक दोनों प्रकार के छंदों का प्रयोग किया है। इनके छंदविधान को यदि सांख्यिकी

के आधार पर देखा जाए तो कहा जा सकता है कि केशव ने अपने काव्यों में दो सौ से अधिक छंदों का प्रयोग किया है। केशव लिखते है–

''भाषा कवि समुझै सबै, सिगरे छंद सुभाइ।
छन्दन की माला करी, सौभत केसवराई।।''
'रामचन्द्रिका' में भी आचार्य केशव का विशेष आग्रह छंद की ओर रहा है–
''जागती जाकी ज्योती भग एक रूप स्वच्छंद।
रामचन्द्र की चन्द्रिका बरनत है। बहु छंद।।''

रामकथा का शांत रस में पर्यावसन केशव को उतना अभिप्रेत नहीं था जितना उनके छन्दों में रामकथा वर्णन उनको अभिप्रेत था।**डॉ० हीरालाल दीक्षित ने 'रामचंन्द्रिका' में प्रयुक्त हीरालाल दीक्षित 82 छंन्दों का उल्लेख किया हैं।** जिसमें प्रमुख छंद है– मात्रिक छंद– दोहा, रोला, धजा, छप्पय, प्राभटिका, अविल्ल, पादाकुलक, प्रिभंगी, सोरठा, कुंडलिया, सवैया, गीतिका, डिल्ला, पद्मावती, हरिगीतिका, हरिप्रिया और रूपमाला आदि। **वार्णिक छंद–** श्री, स्वार, दण्डक, तरणिजा, सोभरानी, हंस, नराच, विशेक, चंचला, सुन्दरी, चन्द्रकला, मनोरमा, कमल, मलिक्का, संयुक्ता आदि।

इनके अतिरिक्त **डॉ० करिणचन्द्र शर्मा ने रामचन्द्रिका' में 31 छंदों की शोध की है** जो इस प्रकार है– रमण, प्रिया, गाहा, नवपदी, आभीर, मालती, मदनमालिका, धनाक्षरी, तोतर, तोरक, पंचवाटिका, मंथना, मधु, बन्धु, ब्रह्मरूपक, भयकरी, झूलना, सवंगता, मरकन्द सवैधा आदि।

इस प्रकार 'रामचन्द्रिका' में कुल 121 छन्द ठहरती हैं।

केशव के छंदों की भावानुकूलता का रहस्य उनकी भाषा में है। भाषा के जरिए उन्होंने जिस छंद में जैसा भाव चाहा है, ढाल दिया है। उनमें इस बात का आग्रह नहीं है कि एक विशिष्ट छंद में विशिष्ट भाव का ही वर्णन किया जाए। केशव को सर्वाधिक संवादों के लिए प्रयुक्त छंदों में मिली है। **परशुराम और वामदेव के सवांद का प्रारंभ 'संयुक्ता' छंद के साथ हुआ है। छोटे–छोटे प्रश्नों के छोटे–छोटे ठलरों के लिए यह छंद अधिक अनुकूल है–**

परशुराम– यह कौन को दल देखिए?

वामदेव– यह राम को प्रभु लेखिए।

परशुराम– कहि कौन राम न जानियो?

वामदेव– सर ताड़का जिन मारियो।

केशव ने अपनी काव्य रचना में मौलिकता को प्रस्तुत किया है। छंद के क्षेत्र में भी उन्होंने मौलिक प्रयोग किए हैं। 'रामचन्द्रिका' के 23 वें प्रकाश में चौबोला और मयकरी छंदों का अभूतपूर्व मिश्रण किया है–

सोंदर मंत्रिन के भु चरित्र। इनके हम पै सुनि मरवमित्र।
इन्हीं लगे राज के काम। इनकी तें सब लेत अकीन।।
कालकूट ते मोहन रीति। मयिगन तें अति निष्ठुर प्रीति।
मदिरा तें मादकता लाई।। मन्दर उदर भई भ्रम भई।।

इस प्रकार कह सकते हैं कि केशव में 'रामचन्द्रिका' में अनेक छन्दों का प्रयोग किया है जिसके कारण अधिकांश आलोचकों ने सराहना की है। **डॉ० गार्गी गुप्त** लिखती है– ''केशव का छंदों पर असीम अधिकार है। छन्द उनके संकेत की श्रृंखला की एक कड़ी हैं परन्तु इस प्रकार का काव्य रचना इतना दुष्कर था कि केशव के पश्चात् इसे इतनी सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने का साहस अभी तक कोई भाषा कवि नहीं कर सका है।''

वस्तुतः केशव उस काल के कवि थे, जो काव्यसाहित्य नियमों की अंधी दौड़ के पीछे भाग रहा था। यह युग काव्य में छन्दों के विविध प्रयोग को अनिवार्य मानता था। केशव छन्द को सिद्धान्ततः भावभिव्यक्ति का साधन मानते है किन्तु व्यवहारतः 'रामचन्द्रिका' में छन्द साध्य बन गये है। वास्तविकता यह है कि केशव की दृष्टि रामचरित्र के कथावस्तु पर उतनी नहीं रही है जितनी कि छन्द निर्वाह पर रही है। केशव अपने युग के मौलिक प्रयोक्ता थे। विश्वंभर 'अरूण' का यह कथन सही है कि ''चन्दबरदायी के बाद हिन्दी में केशव ही ऐसे कवि हैं जिन्होंने अपनी कविता में छोटे–छोटे और कठिन–से–कठिन छन्दों का सफलतापूर्वक प्रयोग किया है। वे छंदशास्त्र के प्रकांड पंडित थे। अतः 'रामचन्द्रिका' के द्वारा वे विविध छन्दों के उदाहरण भी काव्य ममीतों के सामने रखना चाहते थे अतः उनकी 'रामचन्द्रिका' में छन्दों का जैसा वैविध्यपूर्ण और सफलापूर्वक प्रयोग हुआ है वैसा हिन्दी में 'पृथ्वीराम रासों' को छोड़कर अन्य किसी काव्यग्रंथ में देखने को नहीं मिलता।''

'रामचन्द्रिका' के काव्य–सौन्दर्य को स्पष्ट करने के लिए केशव की भाषा–शैली महत्त्वपूर्ण है। 'रामचन्द्रिका' की भाषा–शैली अपने युग तथा भावुक वर्ग के अनुरूप होने के साथ–साथ राम के सम्राट रूप के उद्वात्त चरित्र के साथ नितान्त अनुरूप गरिमामय है। केशव न तो सहज सामान्य जनजीवन के कवि थे और उनकी भाषा–शैली सहज थी। वे विशिष्ट जीवन के कवि थे और उनकी भाषा–शैली भी विशिष्ट ही थी। दण्डी ने महाकाव्य में आदि से अन्त तक रस–प्रवाह को अनिवार्य माना है। 'रामचन्द्रिका' में तीर, श्रृंगार तथा शांत रस को प्रमुखता दी गई है किन्तु इसका अंगी रस वीर है।

केशव के पास शब्दों का भंडार था जिसमें ब्रजभाषा के साथ बुन्देली, संस्कृत, अवधी और विदेशी भाषाओं के शब्द भी थे। भाषा को भाव के अनुसार ढ़ालने की उनमें अद्‌भुत प्रतिभा थी। ऐसा लगता है कि भाषा उनके इशारे पर नाच रही है। सभी महाकवियों की भाँति उन्होंने भी शब्दों की तोड़–मरोड़ की है। मुहावरे और लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा में स्वभाविकता एवं सरलता आ गई है। केशव की अधिकांश रचना प्रसाद गुण से युक्त है ऐसा कहना उपयुक्त है लेकिन उनकी भाषा के प्रसाद गुण से खार खाये बैठने की उपाधि देना उतनी ही बड़ी अव्युक्ति है। भाषा में हीन, माधुर्य एवं प्रसाद तीनों गुणों की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। शब्द–शक्तियों का स्वभाविक प्रयोग है, विशेषकर गंजना के कारण उनके संवाद हिन्दी साहित्य में सर्वोपरि हैं। भाषा में विशिष्टता और कठिनता 'रामचन्द्रिका' में है। इनकी भाषा के बारे में **डॉ० श्याम सुन्दर दास** लिखते हैं– ''हमारी दृढ़ धारणा है कि केशव ने हिन्दी को महान् गौरव प्रदान किया है। जिस प्रकार तुलसी अपनी सरलता तथा सूर अपनी गंभीरता के हेतु सराहनीय है, वैसे ही वरन् उससे भी बढ़कर केशव अपनी भाषा की परिपुष्टता के लिए प्रशंसनीय है।''

समग्रतः 'रामचन्द्रिका' के काव्य सौन्दर्य का विशलेषण करते हुए कहा जा सकता है कि केशव ने इसमें भावनुकूल भाषा का प्रयोग किया हे, इसमें उन्होंने अपने मौलिकता को प्रस्तुत किया है और विभिन्न प्रकार के छन्दावली का प्रयोग उन्होंने इस महाकाव्य में किया है। रस, व्यंजना, अलंकार व्यंजना, प्रकृत्ति चित्रण, प्रबंध पटुता, चरित्र–चित्रण, कथोपकथन, छन्द योजना, भाषाधिकार आदि का प्रयोग केशव के इस महाकाव्य में हुआ है, जो इस काव्य के सौन्दर्य निमार्ण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। केशव के इस महाकाव्य में भाव और कला का अनूठा संगम है।

सहायक ग्रन्थ सूचीः–

1. केशव की कविताई – डॉ० शंकर वसंत मुद्गल, चन्द्रलोक प्रकाशन।
2. केशव की काव्यकला– डॉ० शंकर वसंत मुद्गल, चन्द्रलोक प्रकाशन।
3. रामचन्द्रिका– केशव
4. मध्युगीन काव्य साधना – डॉ० रामचन्द्र तिवारी
5. हिन्दी साहित्य का इतिहावस – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, रामकमल प्रकाशन।
6. संक्षिप्त रामचन्द्रिका की भूमिका – डॉ० पिताम्बर बडथ्वाल
7. केशव और रामचन्द्रिका – डॉ० रामगोपाल सिंह चौहान
8. केशव और उनका साहित्य – डॉ० विजयपाल सिंह